चाहिए। उसकी आंखें चमकीली तथा डीड, व कीचड़ रहित हो। पशु के नथुने गोल, काले तथा ठण्डे होने चाहिए। पशु के नाक पर पसीना अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है। स्वस्थ पशु ठीक ढंग से जुगाली करता है। जुगाली करते हुए जिस पशु के मुंह में झाग आती है उस पशु के दूध में अधिक चिकनाई पाई जाती है। दुधारू पशु का योनीद्वार व पूंछ साफ सुथरी होनी चाहिए।

अच्छे स्वस्थय व अच्छे नस्लीय गुणों के होने के बावजूद भी पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता अलग–अलग हो सकती है। इसलिए बेहतर है कि खरीदने से पहले हम कम से कम तीन बार पशु का दूध निकाल कर मात्रा जांच लें। ध्यान रखें कि पशु का दुध साफ हो व कोई छिछड़े, रक्त कण या दुर्गन्ध आदि न हो। इसके अलावा दुधारू पशु थनों के विभिन्न दोषों से मुक्त होना चाहिए, जैसे– दूध रिसना, वापिस चढ़ना, निकालने के बाद उतरना (ढोकल), धार निकालने के बाद लेवटी खाली न होना, फब्वारा धारा या दो अलग–अलग धारें (पपैया), अतिरिक्त थान आदि।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए चुने गये पशुओं का यदि उचित प्रबन्धन व संतुलित आहार दिया जाये तो डेयरी उद्योग पशुपालक के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्व होता है।

पशुपालक भाई उपरोक्त जानकारी का लाभ उठायें तथा अपनी एवं समाज की उन्नति में योगदान दें।

अधिक जानकारी के लिए आप अपने निकटम पशु चिकित्सालय या पशु औषधालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

मुख्य सम्पादक :

डॉ॰ एल॰ सी॰ रंगा, पी॰ एच॰ डी॰
महानिदेशक

सम्पादक :

डॉ॰ सुखदेव राठी, उपनिदेशक
डॉ॰ नरेन्द्र ठकराल, पशु चिकित्सक

पशुपालन से सम्बंधित अन्य पुस्तकें
Download करने के लिए
QR Code Scan करें

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

दुधारू पशुओं की पहचान

पशुपालन एवं डेयरी विभाग, हरियाणा

बेज नं. 9–12, सैक्टर –2, पंचकुला, हरियाणा
फोन : 0172–2574663–64
ईमेल : dg.ahd@nic.in

डेयरी उद्योग को लाभदायक तरीके से चलाने के लिए उच्च गुणवता के पशुओं का चुनाव करना बहुत जरूरी है क्योंकि पशु ही डेयरी उद्योग का मूल आधार है। इसके लिए जरूरी है कि पशुपालक बढ़िया दुधारू पशुओं की पहचान कर पाए।

उत्तम दुधारू पशुओं का चुनाव किस प्रकार किया जाये इस बारे में इस लेख में विस्तार से बताया गया है।

दुधारू पशु चुनते समय निम्मनलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

नस्ल :

उन्नत नस्लों के पशु गैर नस्लीय पशुओं की अपेक्षा अधिक दूध देते हैं तथा बाजार में उनकी मांग भी अधिक होती है। इसलिए पशु खरीदते समय उनकी नस्ल पर विशेष ध्यान दें। नस्ल का चुनाव पशुपालक अपनी भूमि, जलवायु, प्रबन्धन तथा चारे की आवश्यकता के अनुसार ही करें। हरे चारे की कम उपलब्धता

वाले क्षेत्र में भारी नस्लें जैसे होल्स्टिन फ्रीजन आदि के पशु न पालें। अधिक शुष्क व गर्म जलवायु में संकर या देसी नस्लों जैसे साहीवाल आदि के पशु रखना ही अधिक लाभदायक है। भैंसों में मुर्रा नस्ल की भैंस हरियाणा के जलवायु के लिए श्रेष्ठ है। यह नस्ल देश विदेश में प्रसिद्व है तथा अपने गुणों के कारण काले सोने के नाम से भी जानी जाती है।

ब्यांत :

डेयरी उद्योग के लिए पहले या दूसरे ब्यांत के पशु ही अधिक लाभकारी सिद्व होते हैं। इससे बड़ी उम्र के पशु नहीं खरीदने चाहिएं। बिना ब्याही झोटी भी खरीद सकते हैं।

पैतृक गुण :

संतान के अधिकतर गुण माता–पिता के गुणों पर निर्भर करते हैं। अधिक दूध देने वाले पशु की संतान के अधिक दूध देने का सम्भावना ज्यादा होती है। इसलिए जहां तक सम्भव हो ज्ञात पैतृत गुणों वाले पशु ही खरीदें ताकि पशु के दूध उत्पादन, प्रजनन क्षमता व वृद्वि दर आदि का सही–सही अंदाजा लगाया जा सके।

शारीरिक बनावट :

पशु की शारीरिक बनावट नस्ल के अनुरूप होनी चाहिए। गाय या भैंस ज्यादा मोटी या दुबली नहीं होनी चाहिए। सर्वोतम अवस्था में पशु की पिछली दो पसलियों को छोड़कर शेष पसलियां चर्बी से ढकी रहनी चाहिएं। पशु का शरीर आगे की अपेक्षा पीछे से अधिक चोड़ा होना चाहिए। पतली खाल वाला पशु आमतौर पर अधिक दुध देने वाला होता है। इसलिए पतली, चिकनी, चमकदार, लचीली व चर्म रोगों से मुक्त त्वचा वाला पशु ही खरीदना चाहिए। दुधारू पशु के पैर सीधे तथा बराबर दूरी पर होने चाहिए। खुर छोटे व सुडोल होने चाहिए। पशु खरीदने से पहले उसे चला फिरा कर जांच लें कि पशु की चाल आकर्षक हो व कोई लंगड़ापन आदि न हो। चौड़े व मजबूत पुट्ठों का पशु अधिक उत्पादक होता है। कुल्हे व पुट्ठे की हड्डियों के बीच की दूरी ज्यादा होनी चाहिए। ऐसे पशु की प्रजनन क्षमता व दूध उत्पादन अधिक होता है।

लेवटी तथा थन :

दुधारू पशु की लेवटी बड़ी, सख्त तथा सुडोल होनी चाहिए। लेवटी में कोई गांठ या जख्म आदि न हो। पशु की लेवटी पीछे से ऊँची टंगी हुई हो तथा उसका फैलाव आगे की तरफ होना चाहिए। लेवटी के सामने खून की नसें स्पष्ट व अधिक संख्या में होनी चाहिए। पशु के थन मोटे नर्म तथा बराबर दूरी पर होने चाहिए। थन न ज्यादा छोटे हों न ही लटकते हों। थनों में कोई गांठ, घाव या बवाई आदि न हो। धार न ज्यादा सख्त न ही ज्यादा नर्म होनी चाहिए ।

स्वास्थ्य :

पशु देखने में चुस्त व कान चौकन्ने होने